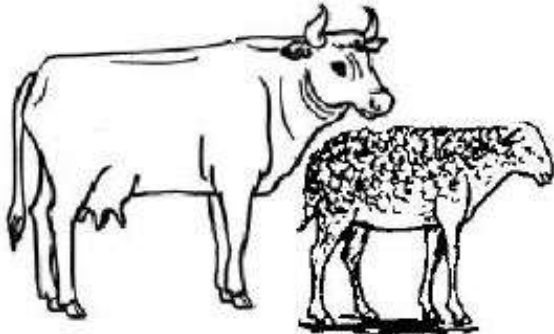


मुहावरे त कहावते संग्रह



मणिहेलु



मणिहेतु

खास मुहावरे त कहावत

पंगवाड़ी अन्तर

2012 EDITION

₹ 10

मणिहेलु

By

Pangiteam

First edition: October 2012

Compiling team:-

Mr. Binaya, Parmas.

Mr. Shubham, Chowki

Editorial team:-

Mr. Mahatam, Karel.

Mr. Hari Ram, Killar.

Mrs. Babita kumari, Chowki

This book can be reproduced for the contribution and development of the Pangwali language. No portion of this book may be reproduced in any form for commercial use, without written permission of the Compilers.

For further suggestions, contributions and involvement in development of Pangwali language, please contact

Mahatam Mobile No. 9418431531

Hari Ram Mobile No. 9418429574

Devi Singh Mobile No. 9418411199

Dhanunjay Mobile No.: 9418411599,

Parmas village, Killar Post, Pangi, Chamba district. 176323.

Mail to: pangiteam@gmail.com

☞ Would you like to read this book in your computer? Or you want to share this book to your friends and relatives, who are out of valley?

For an electronic copy (pdf downloadable file)

please mail to pangiteam@gmail.com

प्रस्तावना

मुहावरे त कहावत, बलि हर बोक अब्बुल लगती। जेस बोली अन्तर सुआ मुहावरे त कहावत भुन्ति, से बोली शुणु जे त बोक करुं जे तति खरि लगती। मुहावरे इये शुणुजे होरे त तसे मतलब होरा भुन्ता। बोक करिं त सबी पता भुन्ति पर मुहावरे सिर्फ तेस मेहणु पता भुन्ते जेस अपु बोली सुसुर पता असि।

एचेल सुआ मेहणु अपु बोली बिश्रीं लगो असे, खास कर मुहावरे। पांगी घाटी अन्तर होरे होरे मेहणु ऐण लगो असे। त इ जरूरी भुण लगो असु की पंगवाड़ी अन्तर कुछ मुहावरे त कहावत किठि कइ के मेहणु नजर अन्तर अण्हि असि।

उम्मिद असि कि इस किताब बलि असि सोबि मेहणु, पंगवाड़ि भाषाई कुछ मुहावरे त संसारे मशहुर कहावते बारे पता लगता। अस उमेद कते कि, तुस सोब इस मणिहेलु किताबे मज्जा नेन्ते।

धन्यवाद

संपादक

Preface

Idioms and Sayings are the beauty of a language. A language tends to be more beautiful and sweet, when there are many idioms. Idioms are those ways of expressions which sounds something and what those meant are far from reality. Everybody can speak a language but only those who speak idioms and sayings who know their language well.

In these days, people are forgetting their language, particularly the idioms and sayings. There are new people coming every day to Pangni valley. Therefore, it is becoming necessary to collect idioms and sayings and bring them out for the public. Since, the old idioms are becoming obsolete and new idioms coming every year with the younger generations it would be nice to make record of them and preserve them.

We hope that through this book we would get to know some idioms and sayings of Pangwali language and other famous voice sayings. We wish, you would enjoy going through the idioms and sayings of this Manihelu book.

Thank you.

Editor

❖ जीं उधार भारो सु - नाप -तोल कर देना। -कोई चीज पूरी भर के देना

❖ हातउ टुठ घेंण - आदत हो जाना -टाईप करुं जे तें हातउ टुठ गोसे

❖ भोटे मखीर करुं - थोड़ा थोड़ा कर के सब खा जाना।



भोटे मखीर करुं

❖ गीहे कुकिड़ दाल बराबर भुन्ति -घर के चिज चाहे जितनी भी अच्छी हो, फिर भी औरों के चीज अच्छा लगना।

❖ पिठ एण - किसी पर बोझ होना -अउं कि तें पिठ ओसा ना।

❖ लघां तूए पुजा गुए - भेजा कहाँ, पहुँचा कहाँ।



गीहे कुकिड़ दाल बराबर भुन्ति

❖ घटी घेण - अभ्यस्त/ आदि होना।

❖ बथ न कैण - जलदी से चलना।

❖ अपु से अन्हारे बि केण - अपने लोगो को दूर से भी पहचानना।

❖ दाछि पकणेल, कागे मुहँ बाड़ - सही समय पर खराबी आना।



बथ न कैण

❖ गुदिर गा - मरना, नीचे मनभाव से बोलना

❖ ढुक न तोपती शाग, उंघ न तोपती बिछाण - जरूरत में कोई भी चीज चलती है।

❖ सुखान्ती नाओ - पसन्द ना करना। -शालु राणि तस सुखान्ती नाओ



ढुक न तोपती शाग, उंघ न तोपती बिछाण



जे भ्याग मारे कदि न हारे

❖ होरि चुल जिआणे जुल, अपु चुल सुने मुल - अपना घर अपना ही होता है।

❖ यक गिहे भांणे बजते रेहेन्ते - परिवार में झगड़ा होता रहता है।

❖ जे भ्याग मारे कदि न हारे - जो सुबह उठता है, उसका कोई भी काम अधूरा नहीं रहता।

❖ टन भइ लेउड, खा कुतुरे जंघ - घर में कमाने वाले होते हुए भी दूसरों को काम करने के लिए बुलाना।

❖ पेटे भारि भुण - गर्भधारण करना। (में जुएलि पेटे भारि असि।)

❖ लिच जुं सिच देन्ति -छोटि मुंह बड़ि बात।



पेटे भारि भुण

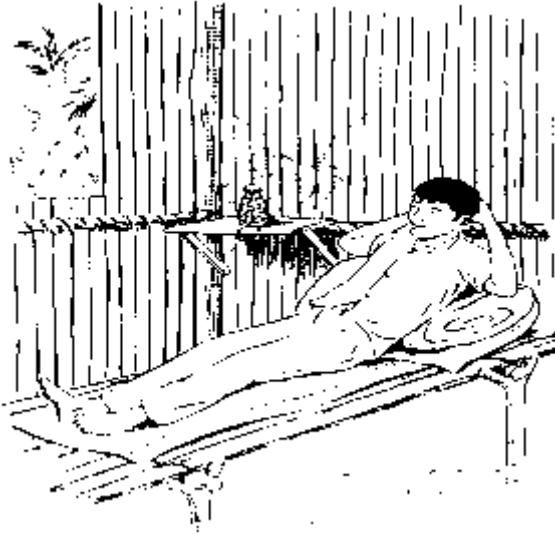
❖ लुंगते जऊ कूण लगे - जवानी में बुढ़ापा आ जाना।-जवान होकर भी काम न करना

❖ गुले फिउड़ फोटाण - पेहले ही अपना हिस्सा ठीक करना। -मेई तें गुले फिउड़ फोटाउ।

❖ साचे बुढ़ी जिआण - सभी की बारी आती है।



लुंगते जऊ कूण लगे



शीते बुढ़ी टाङ्क

❖ चुकिर तोड़ - सही ईलाज, समस्या का सही समाधान।

❖ ढिएड़ी केउ भूण - अनजान होना- मुंह बड़ खान्तु त पुंछिड़ बड़ ना कतु।

❖ शीते बुढ़ी टाङ्क - बार बार अराम करना।

❖ डा डा न शुखाणु - आपस में मिल के न रहना।

❖ न घाटि न बाधी - बेफिकर, बिना कोई चिन्ता में रहना।

❖ गद्दी न छई त न मुंछे - कोई फायदा न होना।

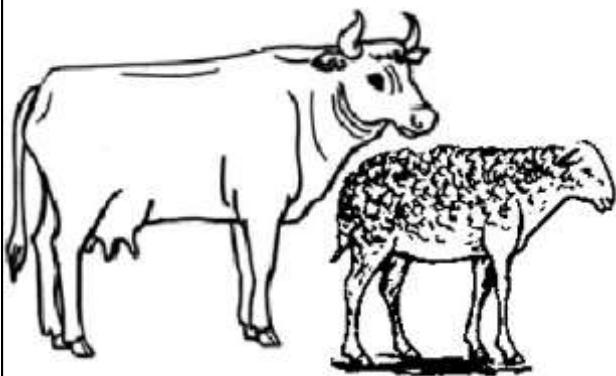
❖ मुंह बाड़ देण - मजे को खराब करना।



- ❖ मगिरि हतोउ लई बिशुं -
परेशानी में होना
- ❖ अपुं चुल हगि भर, बगानि चुल
जियाणु जुल - पराया/ बेगानि
चीज को सम्भाल के इस्तेमाल
करना चाहिए।
- ❖ चौड़ा भुंण - गुस्से में आना। -
तु त तपल बड़ा चौड़ा भोई गा।



मगिरि हतोउ लई बिशुं



चुरीं चिरहउ भूण

- ❖ किड़े खा रेजुड़ हेरि काश
-रस्सी देख के डर
लगना।
- ❖ ना गीहे ना घते - कहीं
का भी ना रहना।
- ❖ बथ भिथ लगुं, फाट खड़ी
घेण -रास्ता बन्द हो
जाना/ रास्ता गुम हो
जाना। में अगर फाट
खड़ी गोउ।

- ❖ चुरीं चिरहउ भूण - पिछे पिछे
चलना/ जाना। किसीका
गुलाम बनना
- ❖ तालु सुखाण छाण - चुप
करना। -लालु तस तालु
सुखाई छड़ा



किड़े खा रेजुड़ हेरि काश

- ❖ बटीइ घेण - डर के मारे चुपचाप
बैठना।

- जेतु चादुर तती जंघ टडीं -जितना कमाई है, उतना ही खर्चा करना। -कोया, जेतु चादुर तती जंघ टडीं, ना त अस सोबी नगी भोई घेन्ते
- हतोउ आले लगुं -चिन्तित होना। फिक्र होना। -तैं हतोउ आले किस लगो से?
- बक भोई घेण - थक जाना।

बक भोई गा



- ना देणी बुध त मन्गे किढ़ण बार - देना तो नहीं है, ऐसै ही बहाना बनना।
- यक कान त सोउ मारते मुग - एक तीर से सौ मृग मारना।
- यक लिंगं कठे हन्डिं शाग बणतु, दुबारि तथा आग लगति -एक बार तो किसी को ठग सकते हैं, पर दुसरी बार पकड़ा जाते हैं।
- चोरे मन खादेड़ा - चोर की मन गोठली पर होता है



चोरे मन खादेड़ा

लमुएल राजे इये तेस खरि बोक
षिचेलि, तेस अन्तर खरि जुएलि
बारे ई सोब बताउ

❖ —खरि जुएलि केस मेति?
तेसे मुल हीरे मोती कैयां बि
सुआ असा।

❖ —तेसे धेणि मन अन्तर तेस
जे सुआ भरोसा असा। होर
तेस फायदे कमि न भून्ति।

❖ —से अपु उम्र भई बुराई न
लान्ति भलु कति।

❖ —से अपु हतेउ बई धागे त
ऊन्ने झिणे बणान्ति।



अपु हतेउ बई धागे त ऊन्ने
झिणे बणान्ति



खरि जुएलि मुल हीरे मोती
कैयां बि सुआ असा।

समान व्यापारी के जहाजी
के समाने ई दूरा मगांति।

❖ —से पथवारि खड़ि घेन्ति, त
अपु गीहे बाड़ी रोटि
खलान्ति। त अपु
नौकरियाणी के धे बखरु-
बखरु कम करं जे देन्ति।

❖ —से जिम घेई कई हेरति त
तसे खरिदति। से अपु
कमाई बोलि तठि बग
बणान्ति।

❖ —से मझीन कशि कई बिशति
त अपु बौउढ बि मजबूत



**खरि जुएलि, देंण् जे हतेऊ
खोलति त गरीबी के सहायता
करंण जे हथ बढ़ान्ति।
कति।**

- से सम्हाई परख छति कि में
धंधा फायदे बाड़ा असा। राति
तेसे लैंप न हुशता।
- से देंण् जे हतेऊ खोलति त
गरीबी के सहायता करंण जे
हथ बढ़ान्ति।
- से अपु गीहे बाड़ी जे डंग हेर
न डरति, किस कि तेसे गीहे
सम्हाई मेहणु गरम झिणे
लान्ते।

● से अपेप दुन्गुस, चेदुर त
शरातोति गरम धागे बई
बणानति।

● जिखेई तेसे धाणि टजोट
अन्तर बिशता तेस देशे
मोटे-मोटे मेहणु के बुछ बि
तेसे सुआ ईज्जत भुन्ति।

● से ब्याथुड़, चादुर त
मझीन बणाई कई
व्यापारीधे बैचति।



**जिखेई तेसे धाणि टजोट
अन्तर बिशता तेस देशे मोटे-
मोटे मेहणु के बुछ बि तेसे
सुआ ईज्जत भुन्ति।**

एणे बाड़े टेम जे अत्मविश्वास
जुओइ बिशति।

❖ से अक्ले बोक कति होर तेसे
बोक अन्तर कृपा, शिक्षा ई
भून्ति।

❖ से अपु गीहे चाल चलण बड़े
गौर जुओई हेरती। बगैर
मेहनते अपु रोटि न खान्ति।



खरि जुएलि अपु गीहे चाल चलण
बड़े गौर जुओई हेरती।

❖ तेसे गभुर तेसे खड़ि कई खरि
ईज्जत कते।



तेसे धाणि बोता कि सम्हाई
जिल्हाणु खरे-खरे कम किए
पर तु तेन्हि सोबि कैयां बि
बड़िया असि

❖ तेसे धाणि बि खड़ि कई
तेसे तारीफ कता, त बोता
कि सम्हाई जिल्हाणु खरे-
खरे कम किए पर तु
तेन्हि सोबि कैयां बि
बड़िया असि।

❖ शोभेई त झूठ असु। खरु
हेरुं बि बैकार असु। पर जे
जिल्हाणु परमेश्वर हेर
डरति तेस जे सोब खरु
बोते।

लिखित पंगवाड़ी भाषा : यक शुरुवात त तसे इतिहास

जुलाई 2006 अन्तर बिनय त धनुंजय भाषाविद् *Linguist* पेहलि बार पांगी घाटि ए। अस तपल भाषाविद् हिसाब जुए ओ थिए। हें लक्ष्य इ थिया कि अस पंगवाड़ी लिख कइ भाषा सुहिलयत करुं जे लोकल मेहणु के मदद कते। मेहणु जपल पुछतेथ कि अस कोउं भिन्थ त अस कि कम कते, त हें जवाब थिया कि अस भाषाविद् भिन्थ त असी जे भाषा लुखो नेई तेस भाषा लिख कइ सुहिलयत करुं जे मदद कते। जपल असी बोलु कि अस 'रिसर्च' कते त सुआ मेहणु इ समझे कि अस Ph.D करुं लगो असे। त से होरे मेहणु जे बि ती बोलुं लगो। ती भोई कइ सुआ मेहणु असी Ph.D बोलि पेहछाण लग गो। जपल अस तुबारि – पंगवाड़ी मासिक पत्रिका छपाण लगो त सुआ मेहणु एसे सुसुर मतलब ना समझ बटे। अस इ हरालुं चाहतेथ कि पंगवाड़ी भाषा अन्तर बि किताब, पत्रिका त होरे छपाणे चिज बण सकती।

असी पंगेई एई कइ छः साल भोई गो असे। इस बुछ असी पंगवाड़ी भाषाएं वर्णविचार त व्याकरण पुठ, त पंगवाड़ी कथा पुठ शोध कई के लेख लिखो असे। किस कि से सोब अंग्रेजी अन्तर (*phonetics*) लिखो असे। तस आम मेहणु न समझ सकते, त 2011 फुलियाठ बुछ, अस पंगवाड़ी वर्णमाला त व्याकरणे पुठ हिन्दी अन्तर किताब बणो असी। ए किताब सिर्फ चेक करुं जे त अगले साल सुसुर छपाण जे ब्योरा किओ असे। तुबारी, बोउए प्यार, मणिहेलु आदि ए सोब कम सिर्फ पंगवाड़ी भाषा सुहिलयत करुं जे असे ना कि Ph.D जे लगो असे। हां, इ जरुर असु कि अस अपु लेख जपल कोई विश्व विद्यालय पुठ दी कई दुई साल पढते त तपल Ph.D डीग्री मी सकती। पर अभेई तकर अस कोई विश्व विद्यालय पुठ Ph.D एडमिशन निओरी नेई। पर असी भाषा-विज्ञान (Linguistics) पढो असा त यक भाषा विकास त साक्षरता प्रोजेक्टे (Language development and literacy project) नाउं, NGO जुए मी कइ कम कते जे कि भाषा सुहिलयत अन्तर कम कते। अब जीं हें कम बढुं लगो असु त अस बि तत टेम देण नेइ लगो। हें NGO बि असी होरे-होरे कम देन्ति। त अब इ जरुरी भुण लगो असु कि इठियाणि मेहणु इ अपु भाषा सुहिलयत कइ सकते।

 Binaya and Audrey, Dhanunjay and Rosy